(ख) इन राज्यों के नाम क्या हैं जिन्होंने गौहत्या पर रोक नहीं लगाई है ?

कृषि और सिंचाई मंत्रालय में उपमंत्री (श्री प्रमुखदास पटेल) : (क) संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची 2 की प्रविष्टि 15 में पशुओं का संरक्षण, रक्षा और सुधार राज्यों का विषय है। अत. उच्चतम न्यायालय द्वारा की गई व्याख्या के अनुसार संविधान की धारा 48 के क्रियान्वयन की ओर राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों का ध्यान आकर्षित किया गया है । फिर भी, इस मामले के सभी पहलुओं की जांच करने और सरकार को अपनी सिफारिशें देने के लिये एक गोरक्षा समिति गठित की गई है । समिति के 31 मई, 1976 तक सरकार को अपनी रिपोर्ट देने की आशा है । समिति द्वारा अपनी रिपोर्ट पेश करने और सरकार द्वारा इसकी सिफारिशों पर निर्णय ले लेने के बाद इस संबंध मे उपयुक्त कानून बनाया जाएगा।

(ख) सूचना एकत्र की जा रही है और यथा-समय सभा-पटल पर रख दी जाएगी ।

दिल्ली में तम्बुओं में चल रहे स्कूल

2013. श्री ओंकार लाल बेरवा : क्या शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) दिल्ली में इस समय कितने स्कूल तम्बुओं में चल रहे हैं; और

(ख) इसके क्या कारण हैं ?

शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय तथा संस्कृति विभाग में उपमंत्री (श्री डी० पी० यादव) : (क) दिल्ली प्रशासन, नई दिल्ली नगर निगम, दिल्ली छावनी बोर्ड तथा दिल्ली नगर निगम द्वारा भेजी गई अपेक्षित सूचना निम्नलिखित है :—

(i) दिल्ली प्रशासन : 64 स्कूल पूर्ण रूप से तम्बुओं में और 97 स्कूल आंशिक रूप से तम्बुओं में, आंशिक रूप से भवनों में कार्य कर रहे हैं ।

(ii) नई दिल्ली नगर निगम : 5 स्कूल तम्बुओं में कार्य कर रहे हैं ।

(iii) दिल्ली छावनी बोर्ड : सभी स्कूल भवनों में कार्य कर रहे हैं ।

(iv) दिल्ली नगर निगम : 130 स्कूल पूर्ण रूप से तम्बुओं में और 30 स्कूल आंशिक रूप से तम्बुओं में कार्य कर रहे हैं ।

(ख) तम्बुओं में स्कूलो के कार्य करने के निम्नलिखित कारण हैं —

(i) भूमि प्राप्त करने मे कठिनाईयां।

(ii) स्थानीय निकायो तथा दिल्ली नगर कला आयोग से नक्शो तथा भवन योजनाओ की मजूरिया/पास करने से संबंधित आज्ञा पत्र उपलब्ध करने की औपचारिकताओं को पूरा करने मे विलम्ब ।

(iii) धनाभाव ।

दिल्ली में अंग्रेजों की मूर्तियां

2014. श्री ओंकार लाल बेरवा : क्या निर्माण और आवास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) दिल्ली में अंग्रेजों की कितनी मूर्तिया अब तक लगी हुई हैं ; और

(ख) इसके क्या कारण हैं ?

निर्माण और आवास तथा संसदीय-कार्य मंत्री (श्री के० रघुरामैया) : (क) अंग्रेजो की सभी प्रतिमाओं को जहां भी वे स्थापित थी वहां से हटा दिया गया था । तथापि, हटाने के बाद इन्हें कहीं न कहीं रखना ही था । इसलिये उन्हें किंग्सवे पार्क में रख दिया गया था । इसका अर्थ यह नहीं है कि इन्हें वहां स्थापित कर दिया गया है ।

(घ) प्रश्न ही नहीं उठता ।

गेहूं की खेती वाला क्षेत्र

2015. श्री ओंकार लाल बेरवा : क्या कृषि और सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या गेहूं के मूल्यों में कमी होने के कारण किसानों ने अपेक्षाकृत कम क्षेत्र में गेहूं बोने का निर्णय किया है ;

(ख) क्या उन्होंने सरसों, चना, मक्की, सोयाबीन आदि की पैदावार करना आरम्भ कर दिया है ; और

(ग) यदि हां, तो इस बारे में सरकार का क्या कदम उठाने का विचार है ?

कृषि और सिंचाई मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री प्रभुदास पटेल) : (क) वर्ष 1975-76 के दौरान रबी की विभिन्न फसलों की बुवाई के क्षेत्र के अन्तिम अनुमान अभी उपलब्ध नहीं हुए है । तथापि उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार वर्ष 1974-75 की तुलना में इस वर्ष के दौरान गेहूं के अन्तर्गत के क्षेत्र में वृद्धि होने की आशा है ।

(ख) तथा (ग). प्रश्न ही नहीं उठता ।

Soil Erosion

2016. SHRIMATI PARVATHI KRISHNAN: Will the Minister of AGRICULTURE AND IRRIGATION be pleased to state:

(a) number of States which face huge losses in foodgrains cultivation due to erosion of soil;

(b) steps Government have taken in this regard; and

(c) how far these steps have checked the soil erosion?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE AND IRRIGATION (SHRI SHAMNAWAZ KHAN): (a) The problems of soil erosion on account of wind and water exists in one form or other in every State of the country. The extent and State-wise distribution of such areas can be estimated only after the whole country is covered by Soil Survey, which work is already in progress;

(b) and (c). The problem of soil degradation is being tackled in the country through the programme of soil and water conservation. It means prevention of all forms of soil degradation by using the soil according to its capability and treating it according to its needs with measures like contour bunding, terracing, gully control, water harvesting, saline-alkaline land reclamation, afforestation and pesture development The programme of soil and water conservation was initiated right from the beginning of First Five Year Plan period. By the end of 1975-76; 21.90 million hectares are likely to be treated with a total expenditure of Rs. 422 03 crores. Plan-wise details of physical achievements and expenditure are given below:

(Area in million ha and Rupees in crores)

Period	Area treated	Expenditure
1st Plan . .	0 30	1 60
2nd Plan . .	1 28	20 36
3rd Plan . .	4·49	77 42
1966-69 . . .	4·59	86 79
4th Plan. . .	8 19	162·46
1974-75 . . .	1·12	39 27
1975-76 (Tentative)	1 93	34 13
TOTAL . . .	21 90	422 03

During the Fifth Five Year Plan period i.e., 1974-75 to 1978-79, soil and water conservation programmes have been further intensified. During the entire plan period, an area of about 5 million hectares is likely to be covered with a total outlay of Rs. 278.28 crores.